

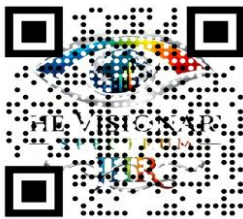
भारत में भौगोलिक ज्ञान का विकास: पुराणों के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. श्रवण कुमार शुक्ल¹, डॉ. भूपेश कुमार मिश्र²

¹असि. प्रो. भूगोल, आ. न. दे. किसान पी. जी. कालेज बभनान गोण्डा, उ. प्र.

²असि. प्रो. स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा (सारण), बिहार

¹E-mail id: sharvan.shukla70@gmail.com, ²E-mail id: drmishrabhupesh@gmail.com



Received 01 August 2026

Accepted 07 August 2026

Published 13 August 2026

Corresponding Author:

डॉ. श्रवण कुमार शुक्ल

Email: sharvan.shukla70@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/tvsjir.v1i3.02>

Funding: This research received no specifics grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN  ACCESS

उपनिषद और पुराण ऐसे स्रोत हैं जिनमें प्रारम्भिक भौगोलिक ज्ञान का उल्लेख मिलता है। इन सभी ग्रन्थों में पुराण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनमें पृथ्वी की संरचना, नदियों पर्वतों, द्वीपों और जलवायु का वर्णन मिलता है। पुराण न केवल धार्मिक या अध्यात्मिक ग्रन्थ हैं बल्कि ये भारतीय ज्ञान विज्ञान के अमूल्य कोष हैं। पुराणों का भुवनकोश(विश्व भूगोल)खण्ड प्राचीन भारतीयों के भौगोलिक, खगोलीय एवं मौसम विज्ञान सम्बन्धी वैज्ञानिक ज्ञान का भण्डार

सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन भारतीय ग्रन्थों, मुख्य रूप से पुराणों में निहित भौगोलिक ज्ञान और उसकी आधुनिक भूगोल में प्रासंगिकता का अध्ययन करता है। पुराणों में ब्रह्माण्ड की रचना, पृथ्वी का विभाजन, नदियों, पर्वतों और जलवायु का वर्णन मिलता है। यद्यपि पुराणों का स्वरूप धार्मिक तथा मिथिकीय है फिर भी उनमें वर्णित भौगोलिक अवधारणायें प्रारम्भिक भौगोलिक ज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती हैं। यह शोध पत्र पुराणों में वर्णित भौगोलिक अवधारणाओं, यथा- जम्बू द्वीप, सप्त द्वीप, वर्ष, पर्वत तन्त्र(कुल पर्वत) और नदी तन्त्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। विभिन्न पौराणिक ग्रन्थों (विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण, ब्रह्माण्ड पुराण और मार्कण्डेय पुराण)के आलोक में सूक्ष्म परीक्षण करते हुए यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि पहले के भूगोल वेत्ताओं को भारतीय उपमहाद्वीप की स्थलाकृति, अपवाह प्रणाली और जलवायु का सटीक ज्ञान था। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि पुराणों के माध्यम से प्राचीन समाज ने प्रकृति, पर्यावरण और स्थानिक संरचनाओं को किस प्रकार से प्रभावित किया है, साथ ही पौराणिक भूगोल केवल कल्पनाशीलता पर ही आधारित न होकर उन्नत प्रादेशिक एवं मानचित्रण की कला को अपने में आत्मसात किये हैं।

कुंजी शब्द (Keywords): पुराण, भौगोलिक ज्ञान, जम्बू द्वीप, पर्यावरण, सांस्कृतिक भूगोल, भारतवर्ष

प्रस्तावना

भूगोल एक ऐसा विज्ञान है जो पृथ्वी की सतह, उसके प्राकृतिक तत्वों तथा मानव प्रकृति सम्बन्धों को अध्ययन करता है। आधुनिक युग में भूगोल का विकास वैज्ञानिक पद्धतियों पर आधारित है परन्तु इसकी जड़े प्राचीन ग्रन्थों में भी मिलती हैं। भारतीय सन्दर्भ में वेद,

है। यह शोध पत्र पुराणों में निहित भौगोलिक ज्ञान का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि इन ग्रन्थों ने भौगोलिक ज्ञान के विकास में किस प्रकार से योगदान दिया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य निम्नलिखित है-

- 1-पुराणों में वर्णित भौगोलिक अवधारणाओं का विश्लेषण करना।
- 2-प्राचीन भारतीय समाज के स्थानिक ज्ञान (समझ)को जानना।
- 3-पुराणों में भारतीय चेतना का अध्ययन करना।
- 4-आधुनिक भूगोल में पुराणों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित है। इसमें विभिन्न पुराणों यथा विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण आदि का अध्ययन किया गया है जो गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का अनुसरण करता है। इसमें भूगोल और इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकों एवं शोध पत्रों एवं उनमें वर्णित श्लोकों का तुलनात्मक अध्ययन करके उन्हें आधुनिक भौगोलिक सीमाओं के साथ जोड़कर विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

1. पुराणों का स्वरूप और महत्व

पुराण शब्द का अर्थ है प्राचीन कथायें। सनातन धर्म में महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित 18 मुख्य पुराण (महापुराण) हैं जो ज्ञान, भक्ति और इतिहास का भण्डार हैं। ये सभी पुराण भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, देवताओं की कथायें, वंशावली और भूगोल, खगोल, नदियों, पर्वतों, द्वीपों और मानव जीवन का विस्तृत वर्णन मिलता है। लेकिन कल्याण वार्षिक पत्रिका¹ में व्यक्त मत के अनुसार भगवान व्यास ने पुराणों की नवीन रचना नहीं की। अवश्य ही उन्होंने चली आ रही पुरुष परम्परा को, जो कि बीच-बीच में अस्त व्यस्त हो गयी थी, व्यवस्थित किया, अपनी वाणी से सजाया, उन्हें अष्टादश पुराणों का रूप दिया।

18 महापुराणों की सूची: श्रीमद्भागवत के अनुसार 18 पुराणों के नाम निम्नलिखित हैं-

1. ब्रह्म पुराण, 2. पद्म पुराण 3. विष्णु पुराण 4. वायु पुराण/ शिव पुराण 5. भागवत पुराण 6. नारद पुराण 7. मार्कण्डेय पुराण 8. अग्नि पुराण 9. भविष्य पुराण 10. ब्रह्मवैवर्त पुराण 11. लिंग पुराण 12. वाराह पुराण 13. स्कन्दपुराण 14. वामन पुराण 15. कूर्म पुराण 16. मत्स्य पुराण 17. गरुड पुराण 18. ब्रह्माण्ड पुराण। इन पुराणों में सृष्टि की उत्पत्ति, राजाओं के वंश, देवताओं की कथायें और खगोलशास्त्र का वर्णन है। भागवत पुराण को विष्णु की भक्ति का केन्द्र होने से अधिक महत्व प्राप्त है जबकि स्कन्द पुराण सबसे बड़ा पुराण माना जाता है।

1. ब्रह्माण्डीय संरचना और पृथ्वी की उत्पत्ति

18 महापुराणों में विस्तृत रूप से ब्रह्माण्डीय संरचना और पृथ्वी की उत्पत्ति तथा उसके विभाजन का उल्लेख मिलता है। पुराणों के अनुसार ब्रह्माण्ड को 14 लोकों (14 Realms) में बांटा गया है इनमें सात ऊर्ध्व लोक (उच्च/दिव्य) और सात अधोलोक (पाताल/निम्न) शामिल हैं जो एक सीढ़ीनुमा संरचना बनाते हैं। ये निम्नलिखित क्रमानुसार हैं-

7 उच्चलोक (ऊर्ध्व लोक):

1. सत्यलोक (ब्रह्म लोक): सर्वोच्च, ब्रह्मा जी का निवास।
2. तपलोक: तपस्वी और ऋषियों का स्थान।

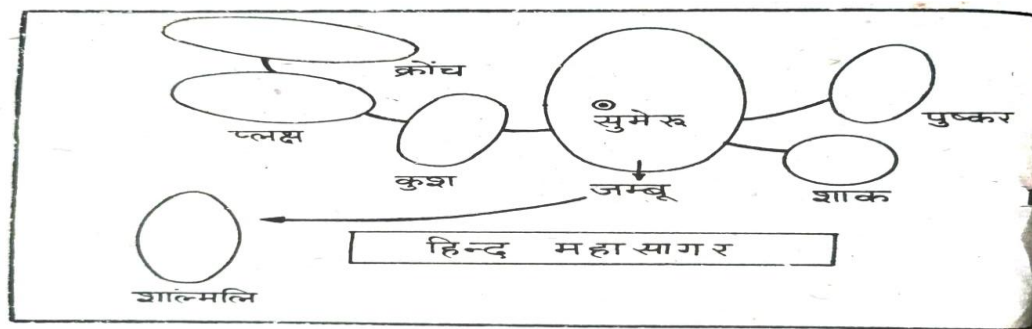
3. जन लोक: ब्रह्मर्षियों का लोक।
4. मह लोक: कल्प के अन्त तक जवित रहने वाले सिद्धों का स्थान।
5. स्वर्ग लोक: इन्द्र का लोक।
6. भुवर्लोक: पृथ्वी और सूर्य के बीच का स्थान
7. भू लोक(पृथ्वी): मनुष्यों का कर्म क्षेत्र

7. निम्न लोक(पाताल/अधोलोक):

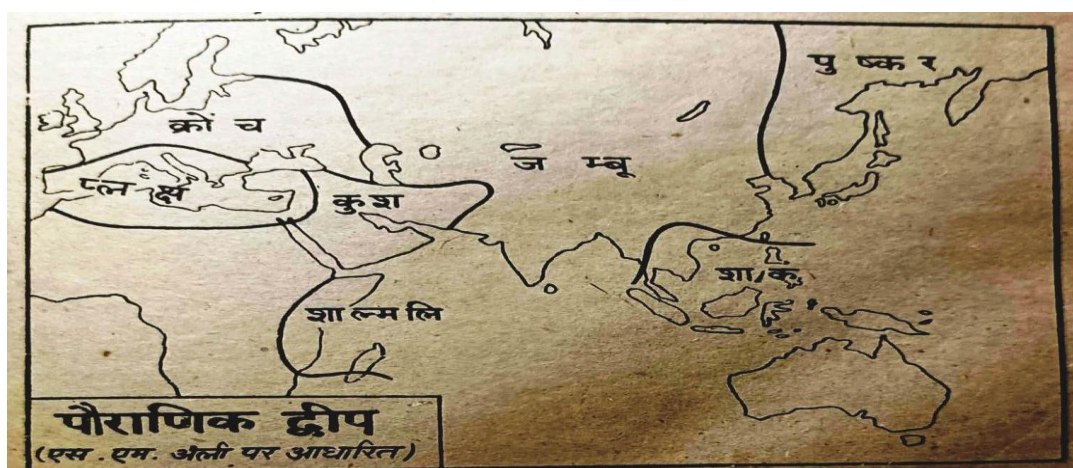
1. अतल
2. वितल
3. सुतल
4. तलातल
5. महातल
6. रसातल
7. पाताल (नरक): दैत्य, दानव और नागों का निवास।

पृथ्वी की संरचना:

पुराणों में समस्त पृथ्वी को गोलाकार मानकर उसे सात द्वीपों या भूखण्डों (Land masses) में विभक्त बतलाया गया है और प्रत्येक भूखण्ड के दोनों ओर कई समुद्र माने गये हैं। श्लोक: सप्त द्वीपा वसुन्धरा, मार्कण्डेय पुराण अर्थात् पृथ्वी सात द्वीपों में विभाजित है- 1. जम्बूद्वीप, 2. प्लक्ष द्वीप, 3. शाल्मलि द्वीप, 4. कुशद्वीप, 5. क्रौंच द्वीप, 6. शाक द्वीप, 7. पुष्कर द्वीप।



स्रोत : एस0 एम0 अली के अनुसार सप्तद्वीपों की स्थिति



इन द्वीपों के बीच विभिन्न प्रकार के महासागर बताये गये हैं। यथा- लवण (नमक), घृत(घी), मधु(शहद) आदि। यहां द्वीप का अर्थ टापू (Island) न होकर भूखण्ड है जो महाद्वीप या किसी महाद्वीप का भाग हो सकता है।

द्वीपों के नाम और उनकी पहचान

क्रम	द्वीप का नाम	आधुनिक भौगोलिक पहचान
1	जम्बू द्वीप	एशिया महाद्वीप (केन्द्र भारत वर्ष)
2	प्लक्ष द्वीप	भूमध्य सागरीय क्षेत्र (एशिया माइनर)
3	शाल्मली द्वीप	पूर्वी अफ्रीका /मेडागास्कर क्षेत्र
4	कुश द्वीप	ईरान, ईराक तथा दक्षिण-पश्चिम एशिया का क्षेत्र
5	क्रौंच द्वीप	पश्चिमी यूरोप का क्षेत्र
6	शाक द्वीप	मध्य एशिया साइबेरियाई क्षेत्र
7	पुष्कर द्वीप	दक्षिण पूर्वी एशिया/जापान का क्षेत्र

ये सातों द्वीप मेरू पर्वत(पामीर) से विभिन्न दिशाओं की ओर को कमल की पंखुड़ियों के समान फैले हुए बतलाये गये हैं। इनमें जम्बू, प्लक्ष और शाल्मलि वृक्षों के नाम हैं। कुश एक प्रकार की घास होती है। क्रौंच और पुष्कर पर्वतों के नाम हैं। इन द्वीपों में सात पर्वत और नदियां हैं। प्रत्येक द्वीप में सात वर्ष,(देश) हैं जैसे जम्बू द्वीप(यूरेशिया) में भारतवर्ष एक देश है। महाभारत एवं कुछ पुराणों के अनुसार तीन द्वीप विषुवत स्थिति के निकट उष्ण एवं अर्द्ध उष्ण प्रदेश में स्थित हैं। ये द्वीप शक, कुश एवं शाल्मलि बताये गये हैं। जबकि पुष्कर को छोड़कर शेष दो द्वीप (प्लक्ष एवं क्रौंच)शीतल प्रदेशों की ओर स्थित हैं। पुष्कर द्वीप में दो जलवायु मिलने की बात कही गयी है।

पुराणों में इन द्वीपों को आवृत्त किये हुए सात सागर भी बताये गये हैं। पुराणों में इन्हें उदधि कहा गया है। उदधि शब्द मूल रूप से संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ जल को धारण करने वाला या समुद्र है (उदकंधीयते अस्मिन् इति उदधिः)। सनातन धर्म के विष्णु पुराण, भागवत पुराण तथा ब्रह्मपुराण में सागर के लिए उदधि का प्रयोग बार-बार किया गया है। जम्बूद्वीपात्परं यस्तु लक्षद्वीपःसमन्ततः। लवणोदधिबाह्येनवेष्टितो मुनिसत्तमः॥ (विष्णुपुराण द्वितीय अध्याय)। भागवत पुराण के पंचम स्कन्ध में ब्रह्माण्ड भूगोल के वर्णन में समुद्र के लिए उदधि शब्द का प्रयोग हुआ है। रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने पुराणों के इसी मत को लंका काण्ड में समुद्र के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयोग किया है:

बाँध्यों बननिधि नीर निधि जलधि सिंधु बारीसा सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीसा॥ (लंकाकाण्ड दोहा-5)।

पुराणों में वर्णित सप्त सागर के नाम और निकटवर्ती द्वीप निम्नलिखित हैं-

क्रम	सागर के नाम	अर्थ	निकटवर्ती द्वीप
1	क्षारोद	लवण सागर(अधिक खरे पानी वाला सागर)	जम्बू द्वीप
2	इक्षुरसोद	गन्ने रस जैसे गहरे रंग वाला सागर (संभवतः इनमें शैवाल की मात्रा अधिक रही होगी)	प्लक्ष द्वीप
3	सुरोद	सुरा की भांति हल्का(स्वच्छ जल वा सागर)	शाल्मलि
4	क्षीरोद	दुग्ध की भांति (अशान्त सागर जिनमें तूफान आने से झाग अधिक मिलता है)	क्रौंच और शक के निकट
5	घृतोद	घृत की भंाति	कुश
6	दधिमण्डोत	दही जैसा(जहां का सागर शीत ऋतु में जम जाय)	क्रौंच
7	शुद्धोद	शुद्ध जल वाला(मीठे जल वाला)	पुष्कर

स्रोत: एस0 एम0 अलीके अनुसार,

जम्बू द्वीप का वर्णन

जम्बूद्वीप सभी द्वीपों के मध्य में स्थित है। महाभारत और बाल्मीकि रामायण के अनुसार भारतवर्ष के दक्षिण से उत्तर कुरु तक माना गया है। जबकि बिल्फोर्ड, गैरिनी और अय्यर ने भारत वर्ष को ही जम्बूद्वीप माना है।² पुराणों में वर्णित जम्बू द्वीप(यूरेशिया भूखण्ड) का नाम है। इसके 9 उपखण्ड हैं जिन्हें वर्ष कहते हैं। जम्बू द्वीप का प्रमुख पर्वत मेरु (पामीर) है जहां से लम्बी-लम्बी पर्वत श्रेणियां विभिन्न दिशाओं में फैली हैं। मेरु के चारों ओर का प्रदेश इलावर्त वर्ष कहलाता है।³ मेरु के पश्चिम में केतुमाल वर्ष तथा पूर्व में भद्राश्व वर्ष जिसे क्रमशः गन्धमदन और माल्यवान पर्वत अलग करते हैं। इलावर्त वर्ष के दक्षिण में भारत वर्ष, किंपुरुष वर्ष(तिब्बत का पठार) तथा हरि वर्ष (हिरात) का प्रदेश है जो हिमवान, हेमकूट तथा निषाध पर्वत से अलग होते हैं। मेरु के उत्तर में रम्यक वर्ष (मध्य एशिया या दक्षिणी पश्चिमी सीक्यांग), हिरण्य वर्ष (उत्तरी सीक्यांग), और उत्तर कुरु (रूस तथा साइबेरिया) स्थित हैं जो क्रमशः नील, श्वेत और शृंग पर्वतों से अलग होते हैं (चित्र)।⁴

पर्वत तन्त्र

वेदों एवं पुराणों में मध्य एवं दक्षिणी जम्बूद्वीप के पर्वतों का तो वर्णन है लेकिन उत्तरी भाग का वर्णन अस्पष्ट है। मेरु पर्वत को सभी ग्रन्थों ने जम्बू द्वीप के मध्य में माना है। यजुर्वेद (3,11) और अथर्ववेद में इसे मध्य में मानते हुए सबसे महत्वपूर्ण पर्वत बताया है। बौद्ध ग्रन्थों में इसे सिनेरू एवं बौद्ध ग्रन्थों में सुमेरू कहा गया है तथा यह भी बताया गया है कि गढ़वाल के निकट रूद्र हिमालय ही मेरु पर्वत है।⁵ भारतीय ग्रन्थों के अलावा⁶ अन्य विद्वानों (चीनी, फारसी, यूनानी एवं बाद के अरबी) ने भी मेरु पर्वत का वर्णन किया है। बेबर⁷ ने मेरु पर्वत की स्थिति बट्टीनाथ के निकट बतायी। यद्यपि बट्टीनाथ हिमालय या हेमन्त पर्वत का अंग है। एस0 एम0 अली⁸ ने पामीर को ही मेरु पर्वत माना है। पौराणिक धर्म ग्रन्थों में भारतवर्ष के अधिकांश पर्वतों का वर्णन किया गया है। जिनमें उत्तरी भारत में हिमवन्त या हेमवन्त (हिमालय का प्राचीन नाम) है। इसका वर्णन ऋग्वेद के 10वें मण्डल के अध्याय 121 के मन्त्र 4 में दिया गया है। पुराणों में भारतवर्ष की प्रमुख शृंखलाओं को कुल पर्वत कहा गया है। मार्कण्डेय पुराण एवं विष्णुपुराण में सात कुल पर्वतों का वर्णन मिलता है, यथा- महेन्द्र (पूर्वी घाट-ओडिशा एवं आन्ध्रप्रदेश), मलया(दक्षिणी पश्चिमी घाट), सह्य (उत्तरी पश्चिमी घाट-महाराष्ट्र एवं कर्नाटक), शुक्तिमान(छोटा नागपुर पठार/गारो खासी शृंखलायें), ऋक्ष (मध्य विंध्य एवं सतपुड़ा क्षेत्र), विंध्य(पश्चिमी विंध्याचल), पारियात्र(अरावली पर्वतमाला) आदि।

स्वर्गापवर्गप्राप्तिश्च पुण्यं पापञ्च वै तदा ।

महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षपर्वतः ॥

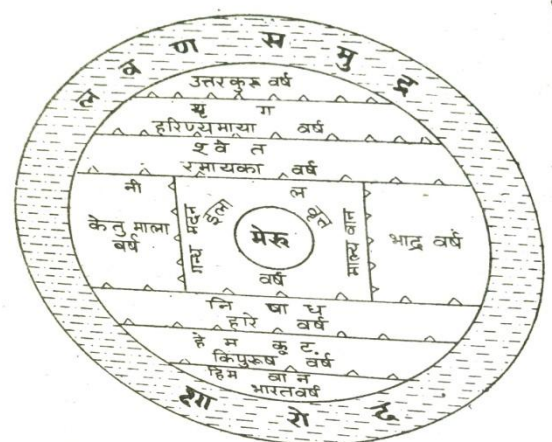
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैवात्र कुलाचलाः ।

तेषां सहस्रशश्चान्ये भूधराः ये समीपगाः ॥

(विष्णु पुराण, अध्याय 57, वर्ष 10-11)

कृष्णगिरि पर्वत जिसे वायुपुराण में कराकोरम के सन्दर्भ में सीमावर्ती पर्वत कहा गया है। कैलाश पर्वत इसे सभी पुराणों में पवित्र मानकर शिव का वासस्थल बताया गया

है। अंजना पर्वत यह सिन्धु के पश्चिम में स्थित वर्तमान में सुलेमान पर्वत है।⁹ ऋषिकेश, केदारनाथ, बट्टीनाथ, मध्य हिमालय के पर्वत हैं। मेनकागिरि पर्वत का उल्लेख वाणभट्ट की कादम्बरी एवं योगिनी तन्त्र में है जिसे सम्प्रति शिवालिक श्रेणी कहा जाता है। ये उत्तरी क्षेत्र के पर्वत हैं। गोवर्धन पर्वत(मथुरा), विंध्याचल पर्वत(रक्षावत) जिसे टालमी ने औक्सेनटन कहा है, सतपुड़ापर्वत, चित्रकूट, महादेव एवं राजमहल की पहाड़ियां (पातंजलि में इसे कालका वन कहा गया है), गया से 25 किमी० दूर बराबर पहाड़ियां¹⁰ महाभारत की गयासिरा एवं पुराणों की गयासिसा (वर्तमान की ब्रह्म योनी पहाड़ी), मन्दार या मन्दराचल पहाड़ी (कलिका पुराण) भागलपुर से 50 किमी० दक्षिण स्थित, पार्श्वनाथ पर्वत (हजारीबाग) रोहित गिरि(रोहतासगढ़), राजगृह की पहाड़ियां(बौद्ध, जैन एवं संस्कृत के



सभी ग्रन्थों में उल्लेख), मध्य एवं पश्चिमी भारत में अर्बुद पर्वत (अरावली)¹¹ अमरकंटक (कालीदास के मेघदूत में तथा पद्म, मत्स्य एवं वायु पुराण में उल्लिखित), मलयगिरि (पद्म पुराण, भरत संहिता एवं अगस्त्य वर्णन में उल्लेख), सह्याद्रि (पश्चिमी घाट का पुराना नाम, मार्कण्डेय अग्नि एवं पद्म पुराण में वर्णन), महेन्द्रगिरि एवं खण्डगिरि और श्रीपर्वत (अग्नि, कर्म एवं पद्म पुराण में वर्णित तथा मल्लिकार्जुन पीठ स्थल) आदि प्रमुख हैं।

नदी तन्त्र

पर्वतों के समान प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में जम्बू द्वीप की नदियों का भी उल्लेख है। पुराणों में सभी नदियों को पवित्र माना गया है और सभी नदियों का जल समुद्र में गिरता है। पुराणों के अनुसार मेरु से चारों दिशा में चाक्षु (पश्चिम), भद्रसोम (उत्तर), सीता (पूर्व), मन्दाकिनी एवं भागीरथी (दक्षिण) तथा सिन्धु पश्चिम की ओर निकलने वाली पवित्र नदियाँ हैं। विष्णुपुराण में पूर्वी भद्राश्व प्रदेश की 43 और पश्चिमी केतुमाला की 49 नदियों का वर्णन है। भारत की सभी नदियों का वर्णन पुराणों में मिलता है जबकि मेरु से उत्तर की नदियों का कम ही वर्णन किया गया है। भारतीय उप महाद्वीप की नदियों का वर्णन भुवनकोश, वाल्मीकि रामायण, बाराहमिहिर की भरत संहिता, प्राचीन जैन ग्रन्थ आदि में विस्तार से किया गया है। मेगस्थनीज ने भी अपने ग्रन्थ इण्डिका में भारतवर्ष की मुख्य नदियों एवं उनके प्रवाह प्रदेश के नाम गिनाये हैं। ह्वेनसांग और फाह्यान ने भी उत्तरी और मध्य भारत की नदियों का वर्णन किया है। पौराणिक भूगोल वेत्ताओं ने नदियों का वर्गीकरण उनके उद्गम स्थलों के आधार पर किया है- हिमवत् पाद प्रसूता (गंगा, सिन्धु, सरस्वती, शतद्रु (सतलज), यमुना), विन्ध्य पाद प्रसूता (नर्मदा, तापी, वेतवती (वेतवा)), सह्य पाद प्रसूता-पश्चिमी घाट से निकलने वाली (गोदावरी, कृष्णा, कावेरी) आदि। मार्कण्डेय पुराण के अध्याय 57 में भारतवर्ष के भौगोलिक वर्णन के अंतर्गत इसके स्पष्ट श्लोक संदर्भ मिलते हैं :

सुमेरुजा शुक्तिमती शकुली त्रिदिवाक्रमुः ।

विन्ध्यपादप्रसूता वै तथान्या वेगवाहिनी ॥ २३ ॥

अर्थ : सुमेरुजा, शुक्तिमती, शकुली, त्रिदिवा और क्रमु - ये नदियाँ तथा अन्य तीव्र वेग से बहने वाली नदियाँ विन्ध्य पर्वत के पाद-प्रदेश (तलहटी) से प्रकट हुई हैं।

करतोया महागौरी दुर्गा चान्तः शिरा तथा ।

ऋक्ष(विन्ध्य)पादप्रसूतास्ता नद्यः पुण्यजलाः शुभाः ॥ २५ ॥

अर्थ : करतोया, महागौरी, दुर्गा तथा अन्तः शिरा - ये सभी नदियाँ ऋक्ष (या विन्ध्य) पर्वत की तलहटी से उत्पन्न (पादप्रसूताः) हुई हैं, जो

परम पवित्र जल से युक्त और मंगलमयी हैं।

सह्य पादविनिष्क्रान्ता नदियाँ (श्लोक 26.27)

गोदावरी भीमरथा कृष्णा वेण्याऽथापरा ।

तुंगभद्रा सुप्रयोगा बाह्या कावेरी तथापगा ॥ २६ ॥

सह्यपादविनिष्क्रान्ता इत्येताः सरिदुत्तमाः ।

अर्थ : गोदावरी, भीमरथी, कृष्णा, वेण्या, तुङ्गभद्रा, सुप्रयोगा, बाह्या और कावेरी नदी : ये श्रेष्ठ सरिताएँ सह्य पर्वत (पश्चिमी घाट) के पाद-प्रदेशों से निकलती हैं।

ऋग्वेद के 10 मण्डल के सूक्त 75 के सभी मन्त्र नदियों से सम्बन्धित हैं।

इमं में गंगे यमुने सरस्वति शतुद्रि स्तोमे सचता पुरुष्या।

असिकन्या मरुद्वर्धा वितस्तयार्जीकीये शृणुह्याया सुषोमया॥¹²

उपरोक्त श्लोक में गंगा, यमुना, सरस्वती, शतुद्रि (सतलज), पुरुष्या (रावी), असिकन्या (चिनाव), वितस्ता (झेलम), मरुद्वर्धा (चिनाव एवं झेलम), अर्जीकाया (व्यास) एवं सुषोम (वर्तमान पाकिस्तान की सोहन नदी) आदि नदियों का उल्लेख है। उत्तर वैदिक एवं पुराण काल में आर्यावर्त क्षेत्र के विस्तार के कारण नर्मदा, ताप्ती, चम्बल, कोसी, महानदी, कृष्णा, गोदावरी एवं कावेरी नदियों का ज्ञान हुआ।¹³ (गंगे च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥) स्पष्ट है कि पौराणिक विद्वानों को अपवाह वेसिन जल विभाजक श्रेणियों का सटीक ज्ञान था। पौराणिक ग्रन्थों में आर्याव्रत (आर्यों

का निवास स्थान) को सप्त सैन्धव या सात नदियों का देश कहा जाता है था।¹⁴ प्लिनी¹⁵ के अनुसार **सिन्धु समूह** में सिन्धु के अतिरिक्त 19 और सहायक नदियां सम्मिलित हैं। इनमें हेडास्पस (झेलम) सबसे महत्वपूर्ण है। सिन्धु की सहायक नदियों में कारुण, हेलमन्द, झेलम, व्यास, रावी आदि मुख्य हैं। मेगस्थनीज ने सिन्धु को आर्यावर्त की सबसे बड़ी नदी माना है।¹⁶ **सरस्वती समूह** में सरस्वती और उसकी सहायक नदी दृशावती थी जो सम्प्रति अदृश्य हो गयी है। **गंगा समूह** में गंगा और उसकी सहायक नदियों का वर्णन है जिसमें यमुना, सरयू (घाघरा), हिरण्यवती(गण्डक), घाण्डकी(बूड़ी गण्डक), सदानीर(राप्ती), बागमती, कौशिकी (कोसी), सोन, चम्बल, गोमती, शारदा, इक्षु(राम गंगा) और महागौरी(दामोदर) आदि मुख्य हैं। **शुतद्रि समूह** में सतलज नदी एवं उसकी सहायक नदियों (रावी, व्यास, चिनाव तथा झेलम) का वर्णन है। वायु एवं मार्कण्डेय पुराण में शतुद्रि नदी में बार-बार बाढ़ आने का वर्णन है। **वैत्राग्नि समूह** में ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियां आती हैं। **असिकनी एवं वितस्ता समूह** में चन्द्र एवं भागा नदियां तथा **सुषोम समूह** में साहेन नदी आती है।¹⁷

खगोल जलवायविक और प्रादेशिक ज्ञान:

भारतीय विद्वानों को यूनानी विद्वानों से पहले ही खगोलीय पिण्डों का ज्ञान प्राप्त था। भारत में **उदगयन** अवलोकन ईसा से 1400 वर्ष पूर्व ही किया गया था जबकि दूसरे देशों में ईसा पूर्व 720 का **ग्रहण** एवं ईसा पूर्व 430 का **उदगयनावलोकन** का उल्लेख है।¹⁸ भारतीय खगोलीय भूगोल में गणित के प्रमुख सिद्धान्त, नियम और प्रक्रियायें मौलिक थीं। वर्षमान¹⁹ (Standard Year), ग्रह मध्यम गति (Planetary Medium Velocity), अयन-चलन (Equinotical and Solistitial Conditions), ग्रहों के परम मन्द और शीघ्र फल (variations in planetary movement), क्रान्ति वृत्त त्रिकत्व (ecliptical obliquity), सूर्य चन्द्र लम्बन (solar and lunar longitudinal parallex), अधिवृत्त (epicycles), उदयास्त कलांश आदि भारत में विकसित हुई। कोलबुरक²⁰ के अनुसार चन्द्रमास का मान जितना हिन्दुओं का शुद्ध है ग्रीक लोगों का नहीं है। पृथ्वी का घूर्णन, गुरुत्वाकर्षण, ग्रहण, चन्द्रकलायें और ग्रह स्थिति²¹ आदि का सटीक वर्णन मिलता है। सूर्य की गति, विषुवत रेखा, आयनवृत्त का वर्णन पुराणों में अहोरात्र (दिन-रात की लम्बाई में परिवर्तन) के सन्दर्भ में दिया गया है। पुराणों 6 ऋतुओं का वर्णन है केवल ऋग्वेद में पांच ऋतुओं का उल्लेख है क्योंकि इसमें हेमन्त और शिशिर को एक ही ऋतु माना गया है। ये 6 ऋतुएं बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर हैं। प्रत्येक ऋतु की वायुमण्डलीय दशाओं (तापमान, मेघ, बिजली, गर्जन, वृष्टि, तुषारापात, हिमपात, स्वच्छ आकाश, घूप आदि) का विशद वर्णन वैदिक साहित्य, पुराणों में, बाल्मीकि रामायण, महाभारत, कालिदास, माघ, बाण भारवि, आदि की रचनाओं, ज्योतिष ग्रन्थों और आयुर्वेदीय ग्रन्थों में किया गया है।²² वायु मण्डल के स्तरों की माप (भास्कराचार्य के सिद्धान्त शिरोमणि), ऋतुओं का कृषि, मानव जीवन और क्रियाकलापों पर प्रभाव का विस्तृत वर्णन रामायण, महाभारत, पुराणों तथा जातक ग्रन्थों में बार-बार आया है।²³ जलवायु के वर्णन पुराणों में विशेषकर वायु पुराण, शिवपुराण, स्कन्दपुराण और भागवत पुराण में है। पुराणों में समुद्र से वाष्पीकरण और पर्वतों से टकराकर वर्षा होने की प्रक्रिया चक्रात्मक रूप से वर्णित है जो आधुनिक वैज्ञानिक जलचक्र से मेल खाती है। मार्कण्डेय पुराण में जनपद और प्रादेशिक भूगोल का वर्णन किया गया है जिसमें भारत वर्ष को 9 भागों (9 वर्ष) में विभक्त किया गया है साथ ही प्राच्य (पूर्वी), प्रतीच्य (पश्चिमी), उदीच्य (उत्तरी), दक्षिणात्य (दक्षिणी) जनपदों की विस्तृत सूची दी गयी है।

निष्कर्ष

पुराणों में वर्णित भौगोलिक सामग्री जिसमें सप्त द्वीप सिद्धान्त, भारतवर्ष का की सीमाओं और उसके आन्तरिक भाग का सटीक वर्णन, कुल पर्वत एवं नदी अपवाह तन्त्र का वर्गीकरण आधुनिक भूआकृति विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुकूल है। पौराणिक भूगोल केवल धार्मिक आख्यान न होकर प्राचीन भारतीय ज्ञान समृद्धि के भण्डार हैं। ये प्राचीन भारत में विकसित प्रादेशिक, भौतिक एवं खगोलीय भूगोल के ऐतिहासिक दस्तावेज हैं जिनका कोई मूल्य नहीं है और आज के युग में ये नितांत प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ:

- 1- कल्याण, हिन्दू संस्कृति विशेषांक, पृ0 295, जैन, एस0 एम0, 1990: भौगोलिक चिन्तन का विकास, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा, पृ0 63.

- 2- जैन, एस0 एम0 1990 : भौगोलिक चिन्तन का विकास, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा, पृ0- 88-89.
- 3- भागवत पुराण विशेषांक, पृ0 – 427.
- 4- पूर्व उद्धृत, सन्दर्भ 2.
- 5- Law,B.C. : Geography of Early Buddhism, P.42
- 6- Ali, S.M. 1966; Geography of Puranas, pp. 47-48.
- 7- Waber: Indisch Studies, Vol.I, p. 51.
- 8- पूर्व उद्धृत सन्दर्भ 6, पृ0-51.
- 9- Law,B.C. : Mountains of India,in Ancient Literature,1968,(IGU) P.8
- 10- वही,
- 11- बी0 सी0 ला ने अर्बुद को केवल आबू पर्वत खण्ड माना है
- 12- ऋग्वेद, मण्डल 10, सूक्त 75, मन्त्र 5.
- 13- पद्म पुराण का उत्तर खण्ड (5.17.66-67)
- 14- कौशिक, एस0 डी0, 2005-06 : भौगोलिक चिन्तन का इतिहास, पृ0-109.
- 15- Law, B.C. : Rivers of India- as in ancient literature form the volume **Mountains and Rivers of India**, Edited by B. C. Law, 1968, p.192.
- 16- वही, पृ0- 197.
- 17- पूर्व उद्धृत सन्दर्भ 2, पृ0 -104-105.
- 18- Dikshit, Shankar Balkrishna : Bhartiya Jyotish, Translated from Marathi to Hindi by Shiva Nath Jharkhandi, Hindi Samiti Series, Vol.9, Lucknow ,1963,p. 668.
- 19- Burgess, J. : Notes on tke Hindu Astronomy,1893.
- 20- Colebrook,H.T. Miscellaneous Essays, Asiatic Research, Vol.II. 1872.
- 21- i. आर्य भट्ट के ग्रन्थ ज्योतिष सिद्धान्त में गोलपाद अध्याय.
ii. सूर्य सिद्धान्त में भूगोल वर्णनम्.
iii. भास्कराचार्य के सिद्धान्त सिरोमणि ग्रन्थ में भुवनकोष.
- 22 -पूर्व उद्धृत, सन्दर्भ 14, पृ0 110.
- 23- i. तांत्रिक भूगोल में जलवायु विज्ञान की पुस्तक-मेघमाला
ii . बाल्मीकि रामायण, राम वन भ्रमण काल में राम-लक्ष्मण वार्ता
iii. महाभारत में पांडव के प्रवास काल का वर्णन-वन पर्व, भीष्म पर्व, शान्ति पर्व
iv. कालिदास का मेघदम, रघुवंश आदि काव्य
v. स्कन्द पुराण

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.